कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

# MHD–23

## हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि ( एम. ए. हिन्दी )
## ( एम. एच. डी. )
## सत्रांत परीक्षा
## दिसम्बर, 2023

### एम.एच.डी.–23 : मध्यकालीन कविता—1

*समय : 2 घण्टे* *अधिकतम अंक : 50*

---

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) मैल चीर सिर तेल न जानइ। यह दुख लोरक तोर बखानइ।
कहत संदेस नैंन झरि पानी। वरसहि मेघ जइस खरवानी।
बूड़ि सरै भाह न पावा। करिया नहीं तीर को लावा।

(ख) मोर पुरुख खाँड जानै। गन गन्धरप सब रूप बखानै॥
पंडित पढ़ा खरा सहदेऊ। चार बेद जित जाय न कोऊ॥

(ग) सौ बरस लौ जगत मंहि, जीवंत रहि करु काम।
'रविदास' करम ही धरम है, करम करह निष्काम।

धरम हेतहिं कीजिए, सौ बरस लों कार।
'रविदास' करमहि धरम है, फल मंहि नंहि अधिकार॥

(घ) नवरंग अमंग भरी छवि सों वह मूरति आँखि गड़ी ही रहै।
बतियाँ मन की मन ही में रहै छतियाँ उरबीच अड़ी ही रहै।
तबहूँ रसखान सुजान अली नलिनीदल बूँद पड़ीं ही रहै।
जिय की नहिं जानत हौ सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै।

2. वियोग से संबंधित चित्रण के आधार पर रसखान के काव्य क वियोग पक्ष पर प्रकाश डालिए। 10

3. सूर काव्य की भाषा पर विचार कीजिए। 10

4. रविदास ने भक्ति का जो स्वरूप प्रस्तुत किया उसे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 10

5. 'चंदायन' के भाषागत सौंदर्य का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए। 10

6. सूफी काव्यधारा की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावलियों का परिचय दीजिए। 10

7. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×2

(क) सुरति-निरति

(ख) मुल्ला दाऊद

(ग) चंदायन का भाषा-सौंदर्य

(घ) रविदास का भक्तिदर्शन